vUrjk"Vªh; fgUnh ,oa lkekftd foKku 'kks/k if=dk

Volume 8, Issue3, (July-Sep 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed 'kks/k if=dk

वर्तमान युग में पतिव्रता के धर्म

– डॉ0 बेबी कुमारी

सामाजिक विज्ञान संकाय (प्राचीन भारतीय इतिहास एवं संस्कृति)

शोध विषय–आर्ष महाकाव्यों में पातिव्रत्य आदर्श : एक अध्ययन

शोध निदेशक – प्रो0(डॉ0) आत्मा प्रसाद सिंह

पूर्व विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग

बी0आर0ए0 बिहार विश्वविद्यालय

मुजफ्फरपुर।

विवाहित स्त्रियों की सामाजिक स्थिति का चरम उत्कर्ष उनके पतिव्रता–धर्म में माना गया है जिसका तात्पर्य है – पति के प्रति पत्नी के कर्तव्यों का निष्ठापूर्वक पालन। यह आदर्श प्राचीन काल से चली आ रही है। महर्षि मनु ने साफ–साफ लिखा है – स्त्रियों को पति के आज्ञा विना यज्ञ, व्रत, उपवास आदि कुछ भी नहीं करना चाहिए। स्त्री केवल पति के सेवा–सुश्रुषा से उत्तम गति पाती है एवं स्वर्ग में देवता लोग उसकी महिमा गाते हैं।

एकई धर्म एकव्रत नेमा। कार्य वचन मन पति पद प्रेमा।।

मन वचन कर्म पतहि सेवकाई। तियहि न यहि सम आन उपाई।।

बिनु श्रम नारी परम गति लहई। पतिव्रत धर्म छड़ि छल गहई।।

पतिव्रता स्त्री अपने मन से पति का हित–चिन्तन करती है, वाणी से सत्य, प्रिय और हित के वचन बोलती है, शरीर से उसकी सेवा एवं आज्ञा का पालन करती है। जो स्त्री पतिव्रता होती है वह अपने पति की इच्छा के विरूद्ध कुछ भी

Volume 8, Issue3, (July-Sep 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed 'kks/k if=dk

आचरण नहीं करती। वह स्त्री पति सहित उत्तम गति को प्राप्त होती है और उसी को लोग साध्वी कहते हैं।[1]

पतिव्रता को पति जो कुछ कहे उसका अक्षरसः पालन करे, किन्तु जिस आज्ञा के पालन से पति नरक का भागी हो, उसका पालन नहीं करना चाहिए। जैसे पति काम, क्रोध, लोभ, मोहवश चोरी या किसी के साथ व्यभिचार करने, किसी को विष पिलाने, जान से मारने, भ्रूण हत्या, गौहत्या आदि घोर पाप करने के लिए कहे तो वह नहीं करें। ऐसी आज्ञा का पालन न करने से अपराध भी समझा जाए तो भी पति को नरक से बचाने के लिए उसका पालन नहीं करना चाहिए। जिस काम से पति का परम हित हो वह काम स्वार्थ छोड़कर करने की सदा चेष्टा रखनी चाहिए। तुलसी दास रचित, रामचरित मानस अयोध्याकांड द्वितीय सोपान के अन्तर्गत जब श्री रामचन्द्र पिता के वचन निभाने 14 वर्ष वनवास में रहने जाते हैं तब सीताजी उनके साथ जाने की बहुत हठ करती हैं, तब श्री राम सीता जी को समझाते हैं –

मैं पुनि करि प्रवान पितु वानी। बगि लिख सुनु सुमुखि सयानी।।

दिवस जात नहीं लगिहि बारा। सुंदरी सिखवन सुनहु हमारा।।

श्री रामजी– हे सुमुखी! हे सयानी! सुनो, मैं पिता के वचनों को सत्य करके शीघ्र ही लौटूँगा। दिन जाते देर नहीं लगेगी। हे सुन्दरी हमारी यह सीख सुनो।[2] श्री रामजी कहते हैं कि यदि प्रेमवश हठ करोगी तो तुम परिणाम में दुःख

Volume 8, Issue3, (July-Sep 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed 'kks/k if=dk

ही पाओगी। वन बड़ा कठिन, क्लेशदायक और भयानक है। जंगल की घूप, जाड़ा, वर्षा और हवा सभी बड़े भयानक है।[3]

रास्ते में कूश, काँटे बहुत से कंकड़ है। उसपर बिना जूते के पैदल चलना होगा। तुम्हारे चरण–कमल कोमल और सुन्दर हैं और रास्ते में बड़े–बड़े दुर्गम पर्वत हैं।

श्री रामजी सीता से कहते हैं – जमीन पर सोना, पेड़ों की छाल पहनना और कन्द मूल, फल का भोजन करना होगा और वे क्या सब दिन मिलेंगे? सबकुछ समय के अनुकूल ही मिल सकेगा।

वन में भीषण सर्प, भयानक पक्षी और स्त्री–पुरुषों को चुराने वाले राक्षसोंके झुंड के झुंड रहते हैं। वन की भयंकरता याद आने मात्र से धीर पुरुष भी डर जाते हैं। फिर हे मृगलोचनी! तुम तो स्वभाव से ही डरपोक हो।

स्वाभाविक ही हित चाहने वाले गुरु और स्वामी की सीख को जो सिर चढ़ाकर नहीं मानता, वह हृदय में भरपेट पछताता है और उसके हित की हानि अवश्य होती है।

श्री रामचन्द्र जी के कोमल मनोहर वचन सुनकर सीता जी के सुन्दर जलनेत्र जल से भर गये। श्रीराम जी की यह शीतल सीख उनको कैसी जलाने वाली हुई, जैसे चकवी को शरद ऋतु की चांदनी रात होती है।

Volume 8, Issue3, (July-Sep 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed 'kks/k if=dk

जानकी जी से कुछ उत्तर देते नहीं बन रहा था। वे यह सोंच कर व्याकुल हो उठी कि मेरे पवित्रा और प्रेमी स्वामी मुझे छोड़ जाना चाहते हैं। नेत्रों के जल (आँसुओं) को जबरदस्ती रोककर वे पृथ्वी की कन्या सीता जी हृदय में धीरज रखकर सास के पैर लगकर हाथ जोड़कर कहने लगी – हे देवी मेरे इस बड़ी भारी ढिठाई को क्षम कीजिये। मुझे प्राणपति ने वही शिक्षा दी है जिससे मेरा परमहित हो।[4]

परन्तु मैंने मन में समझकर देख लिया है पति के वियोग के समान जगत में कोई दुख नहीं है। सीताजी ने कहा प्राणनाथ! हे दया के धाम! हे सुन्दर! हे सुखों को देनेवाले, हे सुजान! हे रघुकुलरूपी कुमुद के खिलानेवाले चन्द्रमा पति के बिना स्वर्ग भी हमारे लिए नरक के समान है।

माता–पिता, बहन, प्यारा भाई, प्यारा परिवार, मित्रों का समुदाय सार, ससुर, गुरु, स्वजन, (बन्धु–बान्धव) सहायक और सुन्दर सुशील और सुख देने वाला पुत्र। जहाँ तक स्नेह और नाते हैं पति के बिना स्त्री के लिए यह सब शोक का समाज है। भोग रोग के समान है, गहने भारूप है और संसार यम–यातना (नरक की पीड़ा) के समान है। हे प्राणनाथ! आपके बिना जगत में मुझे कहीं कुछ भी सुखदायी नहीं है।

जिय बिनु देही नदी बिनु बारी। तैसिय नाथ पुरुष बिनु नारी।।

नाथ सकल सुख साथ तुम्हारे। सरद विमल विधु बदनु निहारे।।

Volume 8, Issue3, (July-Sep 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed 'kks/k if=dk

जैसे बिना जीव के देह और बिना जल के नदी, वैसे ही हे नाथ! बिना पुरुष के स्त्री है। हे नाथ! आपके साथ रहकर आपका शरण (पूर्णिमा) के निर्मल चन्द्रमा के समान मुख देखने से मुझे समस्त सुख प्राप्त होते हैं। सीता जी श्रीरामसे कहती हैं – हे नाथ! आपके साथ पशु और पक्षी मेरे कुटुम्बी होंगे, वन ही नगर और वृक्षों की छाल होंगे निर्मल वस्त्र होंगे। पूर्णकुटी (पत्तों की बनी झोपड़ी) ही स्वर्ग के समान सुखों की मूल होगी। उदार हृदय के वन देवी और वन देवता ही सास ससुर के समान मेरी सार संभाल करेंगे और कुशा और पत्तों की सुन्दरी साथरी (बिछौना) ही प्रभु के साथ कामदेव की मनोहर तोशक के समान होगी।

द्रोपदी सत्यभामा से कहती है –

असत्स्त्रीणां समाचारं सत्ये मामनुपृच्छसि। असदाचरिते भार्गे कथं स्यादनुकीर्तनम्।।[5]

अर्थात्– द्रोपदी के कथनानुसार सत्ये तुम जिसके विषय में पूँछ रही हो, वह साध्वी स्त्रियों का नहीं दुराचारिणी और कुलटा स्त्रियों का आचरण है। जिस मार्ग का दुराचारिणी स्त्रियों ने आलम्बर किया है उसके विषय में हमलोग कोई चर्चा कैसे कर सकते हैं।

जब पति को मालूम हो जाए कि उसकी पत्नी उसे वश में करने के लिए किसी मंत्र–तंत्र अथवा जड़ी–बुटी का प्रयोग कर रही है तो वह उससे उसी

Volume 8, Issue3, (July-Sep 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed 'kks/k if=dk

प्रकार उद्विवन हो उठता है जैसे घर में घुसे हुए सर्प से लोग शंकित रहते हैं।

कितनी ही स्त्रियों ने अपने पतिओं को वश में करने की आशा से हानिकारक दवाएँ खिलाकर जलोदर और कोढ़का रोगी, असमय में ही वृद्ध, नपूंसक, अंधा, बहरा और गूँगा बना दिया है।

तुलसीदास रचित रामचरितमानस अरण्यककाण्ड के अन्तर्गत जब श्री रामचन्द्र जी के साथ सीता जी अत्रि जी के आश्रम में जाती हैं तो उनके आगमन से महामुनि हर्षित हो गए। सीता जी अनसूया जी के चरण पकड़कर उनसे मिली। उन्होंने आशीष देकर सीताजी को अपने पास बैठा लिया और उन्हें ऐसे दिव्य वस्त्र और आभूषण पहनाये जो नित्य ये निर्मल और सुहावने बने रहते है। फिर ऋषि पत्नी उनके बहाने मधुर और कोमल वाणी में स्त्रियों के धर्म एवं कर्तव्य युक्त वखान कहने लगीं। हे राजकुमारी! सुनिये, माता, पिता, भाई सभी हित करनेवाले हैं परन्तु ये सब एक सीमांतक ही (सुख) देनेवाले हैं। परन्तु हे जानकी! पति तो मोक्षरूप असीम सुख देने वाला है। वह स्त्री अधम है जो ऐसे पति की सेवा नहीं करती।

धैर्य, धर्म, मित्र और स्त्री इन चारों की विपत्ति के समय ही परीक्षा होती है। वृद्ध, रोगी, मूर्ख, निर्धन, अंधा, बहरा, क्रोधी और अत्यन्त ही दीन पति का अपमान करनेवाली स्त्री यमपुर में भाँति–भाँति के दुख पाती है। शरीर, वचन और मन से

Volume 8, Issue3, (July-Sep 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed 'kks/k if=dk

पति के चरणों में प्रेम करना स्त्री के लिए बस, यह एक ही धर्म है एक ही नियम है।[7]

ऐसेह पति कर किएँ अपमाना। नारि पाद जमपुर देख नाना। ।

एकइ धर्म एक व्रत नेमा। काय वचन मन पतिपद प्रेमा।।

नैतामतिशये जातु वस्त्रभूषण भोजनैः। नापि परिवदे चाहं तां पृथां पृथिवी समाम्।।

अर्थात् द्रोपदी के कथनानुसार वस्त्र, आभूषण और भोजन आदि में मैं कभी सास की अपेक्षा अपने लिये कोई विशेषता नहीं रखती, मेरी सास कुन्ति देवी पृथ्वी के समान क्षमाशील हैं। मैं कभी उनकी निन्दा नहीं करती।

जगत में चार प्रकार की पतिव्रताएँ होती हैं। वेद, पुराण और सन्त सभी ऐसा कहते हैं कि उत्तम श्रेणी के पतिव्रता के मन में ऐसा भाव वसा रहता है कि जगत में (मेरे पति को छोड़कर) दूसरा पुरुष स्वप्न में भी नहीं है।

मध्यम श्रेणी की पतिव्रता पराये पति को कैसे देखती है जैसे वह अपना सगा भाई, पिता या पुत्र हो। अर्थात् समान अवस्था वाले को वह भाई के रूप में देखती है, बड़े को पिता के रूप में और छोटे के पुत्र के रूप में देखती है। जो धर्म को विचारकर और अपने कुल की मर्यादा समझकर बची रहती है वह निकृष्ट (निम्न श्रेणी की) स्त्री है ऐसा वेद कहते हैं।

Volume 8, Issue3, (July-Sep 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed 'kks/k if=dk

जो स्त्री मौका न मिलने से या भयवश पतिव्रता बनी रहती है जगत में उसे अधम स्त्री जाना जाता है। पति को धोखा देनेवाली जो स्त्री पराये पति से रति करती है, वह तो सौ कल्प तक नरक में पड़ी रहती है। क्षणभर के सुख के लिए जो सौ करोड़ (असंख्य) जन्मों के दुख को नहीं समझती, उसके समान दुष्टा कौन होगी। जो स्त्री छल छोड़कर पातिव्रत्य धर्म को ग्रहण करती है वह बिना परीक्षण के परमगति को प्राप्त करती है।[8] जो स्त्री पति के प्रतिकुल चलती है वह जहाँ भी जाकर जन्म लेती है वहीं जवानी पाकर भरी जवानी में विधवा हो जाती है।

सती अनसूया कहती हैं, हे सीता! स्त्री जन्म से ही अपवित्र मानी जाती है, किन्तु पति की सेवा करके व अनायास ही शुभ गति प्राप्त कर लेती है। पातिव्रत्य धर्म के कारण ही आज भी तुलसी जी श्री हरि भगवान को प्रिय हैं और चारों वेद उनका यश गाते हैं।

हे सीता सुनो, तुम्हारा तो नाम ही लेकर स्त्रियाँ पतिव्रत धर्म का पालन करेंगी। तुम्हें तो श्रीराम जी प्राणों से प्रिय हैं। यह पतिव्रत्य धर्म की कथा सती अनसूया ने संसार के हित में स्त्रियों के लिये कही जिसका कर्तव्य पालन कर स्त्रियाँ अपने पातिव्रत्य धर्म का पालन कर सकेगी और उनके दाम्पत्य जीवन में कभी भी दुख का सामना नहीं होगा।

वास्तव में नारियों के लिए पातिव्रत्य ही एक दुष्कर तपस्या है।[9] पुरुष को तप और शरीरकष्ट से प्राप्त होने वाला फल नारी को पतिव्रत्य द्वारा मिल सकता

Volume 8, Issue3, (July-Sep 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed 'kks/k if=dk

है।[10] पतिव्रता अपने शील सदाचार आदि उत्तम गुणों से तथा सेवाभाव के कारण तपोधना मानी जाती है।[11] भर्तृव्रत ही उसके लिए सबसे बड़ी तपस्या एवं स्वर्ग का निश्चित साधन है।[12] पतिव्रता गांधारी ने जब सुना कि अन्ध वर के साथ उसका विवाह निश्चित हुआ है तब उसी समय उसने अपने नेत्र भी वस्त्र से बांधकर आँखे होते हुए भी अन्धत्व स्वीकार किया।[13] पति सेवा से प्राप्त तपःपुण्य के प्रभाव के कारण ही उसमें श्रीकृष्ण को शाप देने की शक्ति थी।[14] 'तपसान्विता, घोरेण तपसायुक्ता' उसमें त्रैलोक्य को जलाने का सामर्थ्य था।[15] तपोघ्र रव्रता,[16], तपसा उग्रेण कशिता,[17], गान्धारी का सब आदर करते थे और उसके क्रोध से डरते थे।[18] वृद्ध एवं पुत्रशोक से अभिसंतप्त पति के साथ राजमहल में नियमव्यपदेश से निराहार रहकर कुशशय्या पर सोती हुई गान्धारी ने पतिसेवारूपी घोर तपस्या की।[19] अंत में वन में जागर वल्कल धारण करके तपश्चर्या की।[20] गुरुजनों की सेवा और व्रत उपवास नियमों से युक्त कुन्ती का त्यागमय जीवन भी तपोमय था।[21]

गान्धारी, कुन्ती, द्रौपदी, सावित्री, दमयन्ती, ब्राह्मणी, आधवती आदि महान पतिव्रताओं ने गृहास्थाश्रम में ही रहकर जो असाधारण तपस्याकी उसी से उन्होंने दिव्य शक्ति प्राप्त की थी और अपनी अलौकिक सिद्धियों द्वारा अपने असामान्य व्यक्तित्व से सब को प्रभावित किया था तथा अपने लिए परमगति प्राप्त कर जीवन के परम लक्ष्य में सफलता की प्राप्ति से अपना नाम संसार मे स्मरणीय

Volume 8, Issue3, (July-Sep 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed 'kks/k if=dk

बनाया। कतिपय तपस्विनियों के नाम से परम पावन तीर्थ बनाकर उनके व्यक्तित्व के प्रति समाज में भी आदर प्रकट किया गया था।

संदर्भ :

1- मनु 5/165

2- अयो0 सोपान, 2/61–1,2

3- रामाय0 अयो0, दोहा–61

4- रामचरित सो0 2,63,64.

5- महा0वनपर्व 233/10,12,18

6- महा0वनपर्व 233/22,23,24,29

7- रा0 आ0 दो0 4/1,2,3,4

8- रामचरित अरण्य0 दोहा – 4/1,2,9

9- महा0 अरण्क 196.5–8

10- महा0 अनुशासन 250.26

11- महा0 अनुशासन 146.40

12- वही, 81.13

13- महा0 आदि 103.12–13

14- महा0 स्त्री 25.39–40

15- महा0 शल्य 62.10,60

Volume 8, Issue3, (July-Sep 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed 'kks/k if=dk

16- वही, 62.12

17- वही, 66.22

18- वही, 62.11

19- महा0 आश्रमवासिक 5.12

20- वही, 45.21,11,12/25, 15, 16/46, 6

21- महा0 उद्योग 81.37–39.